R. S.

ओ३म पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३३ | माघ संवत २०३९ वि० | सं० ४

गुरु महिमा

मन में समझ गुरु की महिमा, गुरु का ध्यान लगाओ ।
अन्तर बाहर सतगुरु व्यापे, निरख निरख गुन गाओ ॥
बन परबत में नगर ग्राम में, गुरु की परगट लीला ।
मंगल में मंगल है चहुँदिस, समझे कोई सुशीला ॥
छिन छिन पल पल नाम दिवाना, नाम से सूरत लागी ।
नाम सनेही जो नर प्रानी, सो सहज ही वैरागी ॥
शब्द सुरत का साधन करना, दिन प्रतिदिन गुन गाना ।
सुमिरन भजन ध्यान निस बासर, जो कोई करे सियाना ॥
गुरु की मूरत बसी हिये में, अंग संग गुरु देवा ।
अन्तर में रहे भजन ध्यान नित, अन्तर मानस सेवा ॥
तूने गुरु को बाहर जाना, किसने तुझे बताया ।
मूरख सोच समझ मन अपने, सब कुछ गुरु की माया ॥
चेत सवेरे अवसर पाया, सुरत शब्द नहीं भूले ।
अब तो भया बड़भागी, सुरत हिंडोले भूले ॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना ।
की दुर्मति दूर निकारो तब प्रगटे गुरु ज्ञाना ॥

गताँक से आगे

(४) तू कहाँ ढूँढ़ता है ।

वह सब में है और फिर किसी में नहीं । वह हर जगह विराजमान है परन्तु किसी को शक्ति नहीं कि कह सके, यह है या वह है इसका ज्ञान न तो तीर्थ में मिलता है न मूर्ति में । यदि कहीं पता मिलता है तो केवल संतों के सत्संग में मिलता है सत्संग से दृष्टि बदल जाती है और जिसकी दृष्टि बदल गई उसको प्रीतम का दृश्य हर जगह दिखाई देता हैं । दूसरे इस दृश्य को कठिनता से देख सकते हैं ।

कुण्डलियाँ

बैरागिन भूली आप में जल में खोजे राम
जल में खोजे राम जाय कर तीरथ जाने ।
भरमे चारों खूँट नहीं सुध अपनी आने ॥
फूल माहिं ज्यों बास काठ में आग छुपानी ।
खोदे बिन नहिं मिले हाय धरती में पानी ॥
दूध माहिं घृत रहे, छुपी मिंहदी में लाली ।
ऐसे पूरण ब्रह्म कहूं इक तिल नहिं खाली ॥
पलटू सत्सँग बीच में करले अपना काम ।
बैरागिन भूली आप में जल में खोजे राम ॥

(५)ध्यानकर

ध्यान कर और तुझ को मालिक का दर्शन मिलेगा । ध्यान का पाठ केवल योगी, ध्यानी और भक्त ही नहीं सिखाते किन्तु प्रकृति अर्थात सृष्टि कर्म में पग पग पर आवश्यक पाठ के पढ़ाने का प्रबन्ध है । तूने सुना होगा— घड़ियाल पानी में रहता है रेत में अण्डे देता है और पानी में रहकर अण्डे देता है । अण्डे देने के पश्चात फि[illegible] वह बाहिर नहीं आता परन्तु ध्यान की उष्णता (गर्मी) से उसे [illegible] रहता है । तूने देखा होगा पानी भरने वाली स्त्रियाँ अ[illegible] रा तीन तीन घड़े रख कर और बगल में एक एक घड़ा दबाकर [illegible]

हैं और राह में हिलती डोलती हुई बात चीत हँसी ठठोल भी करती जाती हैं परन्तु इनका ध्यान घडों पर रहता है। घड़े नहीं गिरते क्यों कि ध्यान शक्ति सत की माला के समान उन में पुरोई रहती है तूने यह भी सुन रक्खा होगा कि मणि वाला साँप जब चरने या ओस चाटने जाता है तो मणि को बाहिर निकाल कर रख देता है और अपना ध्यान उसी पर जमा रखता है। यह ध्यान के अनेक रूप हैं। तू भी ध्यान करना सीख ले और तब देख तो सही कि किस प्रकार ईश्वर का दर्शन नहीं मिलता! इस ध्यान के सीख लेने के पश्चात तू संसारी कारबार करता हुआ भी मालिक के ध्यान में निमग्न रहेगा और तेरी सुरत शरीर से अलग थलग दिखलाई देगी।

—+—

कुण्डलियाँ

कमठ दृष्टि जो लावैं सो ध्यानी परमान
सो ध्यानीं परमान सुरत से अण्डे सेवे।
आप रहे जल माँह, रेत में अण्डे देवे॥
जस पनिहारी कलस धर मारग में जावे।
कर छोड़े मुख वचन सुरत कलसा में लावे॥
फणि मणि धरे उतार आप चरने को जावे।
वह न ग़ाफिल पड़े सुरत मन माँह रहावे॥
पलटू कारज सब करै सुरत रहै अलगान।
कमठ दृष्टि जो लावै सो ध्यानी परमान॥

—+—

(६) नाम का सुमिरन

सायंकाल और प्रातः काल सन्ध्या में नाम का सुमिरन करना अच्छा है परन्तु यह केवल साधारण मनुष्यों के लिये है सुमिरन इस प्रकार हो कि सोते, जागते, उठते, बैठते बराबर होता रहे यदि तू युवक है तो तुझको अवश्य अपनी स्त्री का किसी समय प्रेम और

प्यार रहा होगा। क्या तू रात दिन में कभी उसको भूलता रहा है ? कंगाल को दस बीस पैसे मिल जाते हैं, वह चलते फिरते उसकी सुध किया करता है। गाय दूर चरने जाती है परन्तु बछड़े को नहीं भूलती हिरन बाजे के शब्द का प्रेमी है। जहाँ निर्दयी बहेलिये ने बीन बजाया मस्त हिरन शब्द के सुनते ही तड़पता हुआ बेसुध होकर उस बीन के पास पहुंच जाता है। बहेलिया उसको जान से मार देता है परन्तु वह शब्द के प्रेम और रस में अपना प्राण गँवाता है अपने को नहीं बचाता। दीपक जलता है। जहाँ प्रकाश फैला पतंगा तड़पता हुआ पहुँचा और जलकर उससे एक हो रहा। कीड़े को भृङ्गी लाकर अपने छत्ते में बन्द कर देती है। कीड़े को उसके नाम का सुमिरन रहता है ध्यान द्वारा वह किसी दिन आप भृङ्गी हो जाता है मछली पानी का सुमिरन करती है। क्षण मात्र के लिये उसे पानी से अलग कर दो वह मर जायेगी। इसी प्रकार तू भी मालिक के नाम का प्रेमी हो जा फिर देखें तो सही कैसे तुझ को ईश्वर का दर्शन नहीं मिलता। परम संत कबीर साहिब की बाणी है: –

दोहा

१. सुमिरन की सुध यों करो, जैसे कामी काम।
एक पलक बिसरै नहीं, निश दिन आठों याम ॥ १ ॥

२. सुमिरन की सुध यों करो, जैसे दाम कंगाल
कहैं कबीर बिसरे नहीं, पल पल लेत सँभाल ॥ २ ॥

३. सुमिरन की सुध यों करो, जैसे नाद कुरंग।
कहैं कबीर बिसरै नहीं, प्राण तजै तेहि संग ॥ ३ ॥

४. सुमिरन की सुध यों करो, जैसे दीप पतंग।
प्राण तजे छिन एक में, जरत न मोडै अंग ॥ ४ ॥

५. सुमिरन सों मन लाइये, जैसे कीट भिरंग।
कबीर बिसारै आपको, होय जाय तेहि रंग ॥ ५ ॥

६. सुमिरन सों मन लाइये, जैसे पानी मीन।
प्राण तजै पल बीछुड़े, सत कबीर कह दीन ॥

यह सुमिरन है । इसी प्रकार तू भी सुमिरन किया कर ।

(७) सुमिरन की सहज युक्ति

खट खट माला फिर रही है । मुख से राम नाम का जाप हो रहा है । मन भीतर ही भीतर आकाश पाताल का चक्कर लगा रहा है । क्या यह सुमिरन है ? तू सहज में समझ सकता है कि सुमिरन नहीं है । यह केवल धोखा और दिखावा है । तू मन से सुमिरन क्यों नहीं करता ? आंख कान मुँह बन्द कर ले । तेरे अन्तर में मालिक के नाम की धुन (ध्वनि) हो रही है । उसको सुरत के कान से सुन इस सुमिरन से तेरा मन पवित्र और निर्मल होगा । तू प्रकाश स्वरुप मालिक का दर्शन कर सकेगा और अपने आप की समझ तुझे आ जायेगी । यह सहज युक्ति है । यह अनहद मार्ग हैं । यह सुरत शब्द योग का अभ्यास है । बाहिर क्या दिखलाता है ? अपने अन्तर में क्यों नहीं जाता ? क्षण मात्र तू इस नाम को जप ले, यह वर्षों की पूजा पाठ से कहीं बढ़कर होगा नहीं तो सारा जीवन नष्ट हो जायेगा और कुछ भी हाथ नहीं आयेगा । तेरी आयु कितनी बीत गई ! सोच समझ ? देख ! बाहिर मुखी बातों से अब तक क्या मिला है जो आगे मिलेगा ? तू अपने पिछले अनुभव से लाभ उठा और तेरा भला होगा कबीर साहिब की पवित्र वाणी है :—

दोहा

१—सुमिरन सुरत लगाय कर, मुख से कछू न बोल ।
बाहिर का पट देयकर, अन्तर का पट खोल ॥ १ ॥

२—माला फेरत मन खुशी, ता ते कछू न होय ।
मन माला को फेरते, घट उजियारा होय ॥ २ ॥

३—माला फेरत युग भया, फिरा न मन का फेर ।
कर का मनिका डाल दे, तू मन का मनिका फेर ॥ ३ ॥

४—कबीर माला काठ की, बहुत जतन का फेर ।

मन माला को फेरिये, जा में गाँठ न मेर ॥ ४ ॥
५—माला तो कर में फिरे, जीभ फिरै मुख माँह ।
मनुआँ तो दह दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाँह ॥ ५ ॥
६—तन थिर मन थिर बचन थिर, सुरत निरत थिर होय ।
कहैं कबीर इस पलक को, कल्प न पावे सोय ॥ ६ ॥

गुरूनानक साहिब कहते हैं:—

आँख कान मुख बन्द कर, सुन अनहद टनकोर ।
नानक सुन्न समाधि में, नहीं साँझ नहिं भोर ॥

(८) सुमिरन का फल

१—तार सुमिरन का बँधा जब, समझो तब तर जाओगे ।
जीते जी सुमिरन भजन और, ध्यान का फल पाओगे ॥ १ ॥
२—तार सुमिरन का न टूटे, नाम की जब लव लगी ।
वह तरेगा तारेगा लाखों को अपने जीते जी ॥ २ ॥
३—तार सुमिरन का न टूटे, तार को रक्खो सँभाल ।
अन्त में है मुक्त पद, हो जाओगे इससे निहाल ॥ ३ ॥
४—तार सुमिरन का न टूटा, नाम की तारी लगी ।
शब्द धुन की गूंज मन को, मीठी और प्यारी लगी ॥ ४ ॥
५—तार समिरन का न टूटे, सुमिरो साँसों साँस तुम ।
राधास्वामी की दया से, करलो पूरी आस तुम ॥ ५ ॥

(९) सतसंग की महिमा

विश्वामित्र और वशिष्ठ विपरीत स्वभाव के मनुष्य थे । विश्वामित्र कहते थे, "पुरुषार्थ सब कुछ है ।" वशिष्ठ का कथन था, सत्संग की महिमा अपार है ।" दोनों में वाद विवाद होने लगा दोनों ही अपने अपने पक्ष को दृढ़ करने लगे परन्तु कोई बात निश्चित न हो सकी । बात बढ़ती ही गई । तब यह सम्मति हुई कि किसी तीसरे के चलकरपास इस झगड़े को मेटना चाहिये । दोनों ही मान गये

और सचाई की खोज में घूमते फिरते कैलाश पर्वत पर शिव जी के पास पहुँचे। उन्होंने दोनों का पक्ष सुना। कहने लगे ब्रह्मा चार वेदों के जानने वाले हैं। वही इस झगड़े को निवटायेंगे। यह दोनों ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने उत्तर दिया "मैं कुछ निर्णय नहीं कर सकता तुम विष्णु भगवान के पास जाओ।" वहां से यह लोग विष्णु के स्थान पर पहुँचे। विष्णु इनकी बातों को सुनकर मुस्कराये, इसका उचित निर्णय शेषनाग कर सकेंगे। जब इन्होंने शेष जी से प्रश्न किया वह बोले मेरे सर पर सारे ब्रह्माण्ड का बोझ है। मैं दबा हुआ हूँ। तुम में से प्रत्येक मनुष्य बारी बारी से अपने पुरुषार्थ और सतसंग के प्रताप का बल लेकर इसे उठा ले। तब मैं तुम्हारा झगड़ा मेट दूगाँ पहिले विश्वामित्र की बारी आई उन्होंने कहा मुझको जो कुछ पुरुषार्थ का फल प्राप्त हुआ हो उसके सहारे मैं ब्रह्माण्ड को अपने सर पर लेता हूँ। अभी शेष नाग ने इनके सर पर बोझ रक्खा ही था कि वह चिल्लाने लगे मुझ में ब्रह्माण्ड उठाने की शक्ति नहीं है तब वशिष्ठ बोले "सत्संग का फल जो कुछ मुझको मिला है मैं उसके हजारवें अंश के बल से इस ब्रह्माण्ड को सर पर ले लूँगा। उन्होंने ब्रह्माण्ड उठा लिया उसी समय शेषनाग ने विश्वामित्र जी से कहा देखा ! यह सतसंग पूरुषार्थ से बड़ा है। ऐ विश्वामित्र ! तुम अपने आप को ज्ञानी कहते हो परन्तु तुम को अब तक सार वस्तु की समझ नहीं है। ऐ अज्ञानी मनुष्य ! पुरुषार्थ में दो बातें हैं—'पुरुष' और अर्थ। जहां द्वैतभाव होगा वहां सच्चा बल नहीं आता। जो अपने को पुरुषार्थी समझते हैं उनमें मेरा और तेरा नाम बना रहता है और यह अबल और निबल करने वाली समझ है परन्तु "सतसंग का अर्थ है 'सत् का संग। आत्मा सत् है इसमें स्थित हो जाता है उसे फिर कुछ करना धरना नहीं रहता। इस में सारी शक्ति विद्यमान रहती है और अहंकार से बचकर ईश्वर ब्रह्म और प्रकृति सब को अपना कर लेता है। यहाँ तक कि वह इनको अपने से पृथक नहीं

समझता। उसके बन क्या ठिकाना है ? जो सब में है' जो सब से है जिससे कोई वस्तु पृथक नहीं है उसको अपने और पराये का भ्रम नहीं होता क्यों कि जगत में केवल यही एक ऐसा विचार है जो निबलता की ओर ले जाता है। इसलिये तू भली भाँति समझ ले कि वह पुरुषार्थ जिसमें अहंभाव और अहंकार है वह अधूरा है। तू सत-संग का माँझा देकर अपने हृदय की वेदना को दूर कर दे। जहां तुझ को सतसंग प्राप्त हुआ फिर तू भी वशिष्ठ जी के समान ब्रह्माण्ड के भार को उठा सकेगा और तुझे कुछ भी कष्ट न होगा क्यों कि दुख की जड़ मेरे और तेरे पने में है। विश्वामित्र जी मन में बहुत लज्जित हुये।

शब्द

१. आके सतसंग में ले अपने जन्म को तू बना।
त्याग दुर्मति दुर्गती द्वचिताई और दुब्धापना ॥ १ ॥
२. खाना दिन को रात को, सो रहना तेरा काम है।
है पशू योनी में पशु ज्यों, कर रहा है कल्पना ॥ २ ॥
३. देह नर की पाके, क्या करने लगा है भूलकर।
अन्त में सहना पड़ेगा यम के हाथों ताड़ना ॥ ३ ॥
४. जैसी आसा तैसी बासा, जैसी मति वैसी गती।
सुन गुरु के बचन सुन तज झूटे जग की बासना ॥ ४ ॥
५. शब्द का अभ्यास कर, अनुभव का जीवन प्राप्त कर।
राधास्वामी की दया से, कुछ दिनों कर साधना ॥ ५ ॥

क्रमाँक से आगे

सुमिरन, ध्यान, भजन, लगातार

परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मौज है मौज है उस दाता दयाल की।
मौज करा रही है करम प्यारे कृपाल की ॥

जनून था वहशत थी पंथ की करूँ खोज।
अंजाम खोज का जाहिर करातो मौज अकाल की ॥

सवाल किया जायगा कि इस मौज की गरज़ क्या है ?

मित्रो ! यह संसार अपने ही ख्याल का खेल है। जो व्यक्ति जैसा स्वयं है वह दूसरों को भी वैसा ही समझने के लिये विवश है। बहरा आदमी जब किसी से वार्तालाप करता है तो ऊँची आवाज से बोलता है क्यों कि जाने या अनजाने उसका यह ख्याल रहता है कि दूसरा आदमी भी जोर से बोलने पर सुन सकेगा। इसी प्रकार चूँकि मुझे भी प्रत्येक वस्तु को अमली दृष्टि कोण से जानने और समझने की लालसा रही है, इसी विचार से कि शायद दूसरों को भी ऐसी ही इच्छा हो मैं सहानुभूति के प्रभाव से काम करता हूँ। प्रत्यक्ष रूप में मुझे और कोई कारण प्रतीत नहीं होता। सम्भव है स्वभाव का नियम काम कर रहा हो अथवा दाता दयाल का दिया हुआ संस्कार हो कि फकीर संत मत की तालीम में परिवर्तन कर जाना। उन्होंने मेरे नाम यह शब्द लिखा था—

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देशा ॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ॥

मैंने गुरु बचन को ही नाम समझा है।

ध्यान मूलम् गुरु मूरति, पूजा मूलम् गुरु पदम्।
मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम् मोक्ष मूलम् गुरु कृपा ॥

उनका आदेश था कि जब तक शरीर है सतसंग कराते रहना उनका कुतुब की हैसियत में। कुतुब ध्रुव तारे का नाम है जो अपनी जगह नहीं छोड़ता। फकीरों में जो कुतुब होते हैं वह अपने निज स्वरुप (निज) के अलावा किसी अन्य के पुजारी नहीं होते और न मालिक को अपने से अलग समझते हैं। इसके साथ साथ वे :—

(१) किसी विशेष निजी गरज या उद्देश्य के लिये किसी से हेर फेर कर बातें नहीं करते ।

(२) सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये द्वार-द्वार की ठोकरें नहीं खाते ।

(३) उनका कार्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप में प्राणी-मात्र का भला चाहना होता है । इस उद्देश्य वश मैंने संतमत या मनुष्य धर्म की सेवा की है और जब तक जीवन है करता रहूंगा इस लेख लिखने के कार्य का भी यही उद्देश्य है ।

सांसारिक जीवन या प्रवृत्ति मार्ग के विषय में जो सुमिरन ध्यान और भजन की तामील संतों ने दी है इसका दूसरा नाम नाम दान भी है ।

इसकी व्याख्या मैंने पहिले परिच्छेद में भली प्रकार कर दी फिर भी वह कुछ और व्याख्या चाहती है । यहां संक्षेप में वर्णन करके आगे के विषय को लूँगा । सहसदल कंवल या ज्योति स्वरुप का केन्द्र मनुष्य के अपने अन्दर है । कोई भी मनुष्य गुरु द्वारा समझ या भेद लेकर इस स्थान पर दिल एकाग्र करेगा वह सांसारिक जीवन में अवश्य सफलता प्राप्त करेगा । जितने भी पुरुष अपने कार्यों में सफलीभूत हुए हैं सबने जाने या अनजाने इसी स्थान का सहारा लिया है । यह भी याद रखने की बात है कि असफलता या नाकामयाबी का केन्द्र भी यही है । यदि मैं इन बातों की सचाई को साबित करने को लिखूँ तो एक दफ्तर की जरूरत होगी । इसलिये उसूल को समझ लो और अमल करो । सचाई स्वयंमेव प्रगट होने लगेगी ।

इसलिये हमेशा आशावादी (Optimistic) रहो । जो निराशा वादी (Pessimistic) होते हैं । उनको इसी स्थान (सहसदल कंवल) से नाकामयाबी होती है । अर्जुन के दिल में निराशावाद के

से आशावादी बनाकर ज्योति स्वरुप के दर्शन कराकर सफल बना दिया। इसी प्रकार यह सुमिरन, ध्यान, और भजन मनुष्य की मानसिक अवस्था को श्रेष्ठ बनाने में, जिसका कोई सम्बन्ध पंच भौतिक जगत से नहीं होता मददगार साबित होता है।

मानसिक अवस्था की श्रेष्ठता से मेरा अभिप्राय मन का ठहराव निश्चयात्मक होना विश्वास शान्ति और आनन्द है, जिसको यह गुण या सम्पदा प्राप्त हैं समझलो कि उसकी मानसिक अवस्था ठीक है वर्ना खराब है। किन किन दशाओं में मनुष्य की मानसिक अवस्था खराब होती है उसके बारे में मैं अपना अनुभव वर्णन वर्णन करता हूँ।

एक मनुष्य के पास धन दौलत है, आदर मान, आरोग्यता है लेकिन अनुभव बतलाता है कि वह फिर भी अशान्त है। क्यों ?

(१) साधारण तया प्रत्येक मनुष्य के दिल में बचपन के बाह्य प्रभाव और पुस्तकों के अध्ययन से यह विश्वास हो जाता है कि शान्ति और सकून (निश्चलता) ईश्वर भक्ति गुरू भक्ति नाम जाप और योग साधन आदि से प्राप्त हो सकता है। यह धार्मिक संस्कार या विचार अपना प्रभाव दिखलाता है और शान्ति का अभिलाषी पुरुष इन प्रभावों के कारण दौड़ धूप करता है। ऐसे पुरुषों में से मैं भी एक था।

दातादयाल महर्षि, शिवव्रत लाल जी की एक हिदायत याद आ गई है उसका यहाँ पर संकेत करना आवश्यक प्रतीत होता है। एक दफा का जिक्र है कि मैं धाम में उनके साथ तालाब के किनारे घूम रहा था। उस समय और कोई नहीं था। उनको मेरी दीवानगी का इल्म था। आप एक जगह चट्टान पर बैठ गये और मेरी ओर देख कर कहा, 'फकीर ! एक ख्याल ने या उलझन ने तेरे दिल को जकड रक्खा है। चले चलो। आज्ञा का पालन करो। समय आ रहा है जब तुम उस उलझन से निकल जाओगे और स्वतंत्र और निद्वाल

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

(तृप्त) हो जाओगे।

आज आगया है वक्त वह हो गया निहाल मैं।
कट गया गुलामी का बन्धन पाया कमाल मैं।।
चाहता हूँ तुम भी निकलो मजहब और मिल्लत के शैदाइयो।
सुमिरन ध्यान भजन को कुछ समय अमल में लाइयो।।
साफ बयानो इसलिये कि तुम्हें उलझन से छुटकारा मिले।
तुम्हारे लिये प्रगट हुये हैं दारुये सतसंग से ।।

अशान्ति का दूसरा कारण शारीरिक निर्बलता है। इसका कारण पाचन शक्ति की कमजोरी, विषय विकार का जीवन और जीवन व्यतीत करने के अमली और अमली उसूलों से अनिभिज्ञता है। इसका इलाज है जीवन बिताने के सही उसूलों का ज्ञान और अमली जीवन। वह उसूल यह है कि कर्म इच्छा अथवा वासना कैसे करें और क्या करें। इन बातों का ज्ञान आवश्यक है मगर यह सबके लिये एक नहीं होता क्यों कि प्रकृति परिस्थिति आदि की भिन्नता होती है। समय २पर भिन्न २ प्रकार की हिदायतों की आवश्यकता होती है। इसलिये वक्त गुरु का सत्संग नितान्त आवश्यक है।

(३) तीसरा कारण अशान्ति का यह है कि मानव जगत के बाहरी प्रभावों और बाह्य जगत के रंग रूप से प्रभावित होकर बुद्धि यह सोचने और जानने के लिये विवश होती है कि वह कौन है क्या है, दुनियाँ क्या है क्यों है आदि २।

पहली श्रेणी के लोग भक्त दूसरी वाले आर्त्त व दुखी और तीसरी श्रेणी के लोग जिज्ञासु कहलाते हैं। पहली श्रेणी वालों का इलाज प्रेम दूसरी वालों का इलाज ज्ञान है। पहली श्रेणी वालों को कामयाबी देर से होती है। दूसरी श्रेणी वालों को बहुत देर से और तीसरी श्रेणी को जल्द कामयाबी हो जाती है। मगर शर्त यह है कि वह किसी पूर्ण पुरुष से सुमिरन ध्यान और भजन सीखकर जीवन को अमली बनायें। कई एक मेरे जैसे भी होते हैं जिन को तीनों रोग

दुखी करते हैं । जब मैं अपनी हालत पर विचार करता हूँ तो पता चलता है कि इन बातों के अलावा मुझे साँसारिक कठिनाइयों से भी बहुत लाचार होना पड़ा था । यही कारण था कि मुझे सही मार्ग पर लाने के लिये दातादयाल को बहुत कुछ कष्ट और मुसीबत सहनी पड़ी । अतः हमदर्दी के वशीभूत होकर मैं अपने जैसे रोगियों को एक नुसखा बताता हूं वह है किसी पूर्ण पुरुष की पूजा और बस । यद्यपि बताने को तो मैंने बता दिया मगर सोचता हूँ कि समझेगा कौन ?

एक वाका सुनाता हूँ सुनो ! मैं गिडरवाहा स्टेशन पर स्टेशन मास्टर था । एक बार मैं दुनियावी तकलीफ से बेहद परेशान हुआ शायद २४ या २५ दिसम्बर की बात है जब कि भडारे का समय था मैंने दातादयाल को तार दिया कि मैं अत्यन्त कष्ट में हूँ । उस समय वे धाम में थे । सत्संग हो रहा था । तार मिलते ही सब काम छोड़कर हंसराज को साथ लेकर गिडरवाहा पहुँचे । सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी । काँपते हुये मकान पर पधारे । ढ़ायें निकल गई । कठिनाई का निवारण किया और चले गये । इस प्रकार के निज अनुभव के आधार पर मैं बार बार कहता हूँ कि हर एक रोग, मुसीबत तथा कष्ट का इलाज सुमिरन, ध्यान और भजनहै अर्थात जो चाहते हो उसकी याद उसका ध्यान और उसमें लय होना । जिसका जैसा इष्ट होता है वही इष्ट उसकी मदद करता है ।

शिष्य दुखी तो मैं दुखी, आदि अंत तिहुँकाल ॥
पलक एक में प्रगट हो, छिन में करूँ निहाल ॥

(कबीर)

इष्ट का नाम सतगुरू है

माँगो मिलेगा, अवश्य मिलेगा । मगर उसका भेद है । जरूरत की वस्तु वहाँ से माँगीं जाय जहाँ से वह मिल सकती है । शाँति

सकून (निश्चलता) और आनन्द तुमको मन के अन्दर मिलेगा इस मन की अवस्थायें हैं—

महः	जनः	तपः
त्रिकुटी	सुन्न महासुन्न	भँवर गुफा
मन की अवस्थायें	त्रिकुटी =सुमिरन	) प्रत्येक स्थान
	सुन्न महासुन्न=ध्यान	) पर सुमिरन
	भंवर गुफा=भजन	) ध्यानऔर

भजन अलग २ भी होता है।

मन से अपने अन्तर में अपने इष्ट से इतना प्रेम करो कि मस्ती आने लगे और उस मस्ती में गर्क या लय हो जाओ। फिर भजन करो अर्थात शब्द सुनो, और शब्द सुनते २ बेहोशी से बचो। याद रक्खो वह आन्तरिक शब्द अनहद या नाम तुमको बेहोशी से बचा सकता है बशर्ते कि किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग प्राप्त रहे। जी तो चाहता है कि विवरण सहित लिखदूँ लेकिन अंदेशा है कि लोग ग़लत फहमी में न फंस जाँय। दुनियाँ किताबों को पढकर दीवानी हो जाती है।

मैंने एक बार ६ महीने तक बारह घंटे रोजाना अभ्यास किया। ज़मीन पर सोता था। स्त्री दुखी थी। यद्यपि सरकारी काम काज करता था मगर मुझे इल्म न था। चूँकि मैं रिश्वत नहीं लेता था इसलिये स्टाफ के लोग मेरी इज्जत करते थे। उनको रुपये पैसे का भी फायदा था क्यों कि मेरे त्याग से उनको अधिक हिस्सा मिल जाता था। लेकिन मैंने जो कुछ किया अपने लिये किया दूसरों की नुक्ता चीनी और ऐबों को देखने से बचता रहा। इन कारणों से उस समय में स्टाफ के लोग मेरा काम चलाते रहे और मुझे किसी आपत्ति में नहीं पड़ने दिया। मेरी इच्छा थी कि 'सार बचन' आदि ग्रंथों में जिन दर्जो का वर्णन है वह पूर्णतया मुझ पर प्रगट हो जाँय रोजाना अभ्यास की डायरी लिख २ कर रखता जाता था छ.

महीने बाद १॥) रु० की टिकट लगाकर वह डायरी दातादयाल के पास भेजो। दाता दयाल ने उसका जो उत्तर मुझे दिया, उसमें अभ्यास के बजाय सत्संग को अधिक प्रधानता दी। अंत में जब मैं उनकी सेवा में हाजिर हुआ तो उन्होंने बात समझा दी। इसलिये मैं पिछली बातों के अनुभव के बाद मैं यह ख्याल करता हूँ कि नहीं मालूम कितने भाई इस अभ्यास की उलझन में फंसे हुये हैं, इसलिये हमदर्दी के ख्याल से सचाई के साथ कहता हूँ कि शायद वे इस खब्त से निकल जाँय। बहुत से सत्संगियों ने अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया और बहुत से मेहनत से उकता कर पथ से विमुख हो गये इन बाह्य प्रभावों ने मुझे सचाई को प्रगट करने के लिये मजबूर किया है और कहता हूँ कि दोस्तो ! भटको मत। यदि पूर्ण पुरुष मिल जाये तो विशेष मेहनत की जरूरत नहीं। शान्ति जल्द प्राप्त हो सकती है। बशर्ते कि चेत कर उनकी सेवा करो। सेवा से अभिप्राय उनके बचन को सुनने, गुनने और अमल करने से है।

आओ, आओ मित्रो तुम मेरे सत्संग में।
बात सुनो और गुनो जो कहता हूँ सत्संग में॥
न समझना मुझे पाखंडी मतलबी ए भाइयो।
मैंने उम्र गुजारी है अपनी खास ढंग में॥
न मेरा कोई पंथ है, पंथ है दिल मेरा अपना।
जिसकी समझ देता हूँ मित्रो अब सत्संग में॥
न हविस दौलत की है न कोई अपना डेरा।
न मान इज्जत की हविस है रहता हूँ ऐसे ढंग में॥

सन् १९४२ ई० में रिटायर होने के बाद नहीं चाहता था कि सत्संग आदि का कार्य करूँ क्यों कि इस काम में बहुत तकलीफें भी हैं। लेकिन चूँकि दातादयाल की आज्ञा थी अतः बाबा सांवले शाह के दरबार में गया। अपने विचार उन पर इस दृष्टि से प्रगट

करूँगा। मैंने मस्ती की हालत में १५ मिनट में जो ग़जलें कहीं उन को सुनकर उन्होंने कहा कि गुरु आज्ञा मुख्य है। सत्संग का कार्य अवश्य करो। घर में रह कर काम करने से तकलीफ होगी। इसलिये उचित है कि धाम चले जाओ। मैंने कहा कि महाराज धाम डेरों या दायरों में सचाई नहीं रह सकती। उनको चलाने के लिये हेरा फेरी करनी पड़ती है। दूसरी बात यह है कि जब दाता दयाल ने मुझे लाहौर में इस कार्य का आदेश दिया था तो मेरे इस प्रश्न के उत्तर में कि मैं तो कुछ जानता नहीं क्या बताऊँगा, कहा था कि "फकीर जो कहोगे सत् होगा"। इन सब बातों के सुनने के बाद आप ने कहा कि निर्भय होकर काम करो और मेरी हर तरह पर सहायता करने का वायदा किया। मैं उनके प्रोत्साहन का आभारी हूँ। जो काम मुझ को मौज ने लेना था ले लिया। अब मेरी आखिरी उम्र है। यदि किसी को सत्संग की आवश्यकता हो तो वह मिल सकता है।

—+—

हजूर परम दयाल जी महाराज के अन्तिम पत्र

(गताँक से आगे)

यह दास परम सन्त हजूर परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज द्वारा लिखे गये ६-८-८१ के पत्र की व्याख्या अपनी समझ के मुताबिक कर रहा है। सबसे पहले उन्होंने अपने सारे जीवन के अनुभव के आधार पर यह बताया कि इन्सान एक चेतन का बुलबुला है। इससे पूर्व कि जो थोड़ा सा अनुभव इस दास को हुआ वो लिखूँ, मैं पिछले सन्तों की वाणियाँ या उन के विचार रखना चाहता हूँ जिन में उन्होंने भी हजूर परम दयाल जी महाराज के इस अनुभव की पुष्टि की है। चाहे वर्णन-शैली अलग हो या इशारे में कहा गया हो, मगर इस अनुभव का भाव बीते संतों की बाणियों में सिद्ध होता है।

पहले राधास्वामी दयाल अपने सार वचन में लिखते हैं।

"अकह अपार अगाध अनामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
हैरत रूप अथाह दवामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
अगम रूप धर आये अगामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
अलख धाम के फिरे हुए धामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
सत्तलोक में हुए सतनामी, वह मेरे प्यारे राधास्वामी
भंवरगुफा बैठे अतंरजामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
महासुन्न पर बैठक ठानी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
सुन में अक्षर रूप मुकामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
गगन मंडल ओंकार अकामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
रूप निरंजन धारा श्यामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
मन के घाट हुए अब कामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
इन्द्री घाट विकार घटामी, सो मेरे प्यारे राधासामी
स्थूल रूप धर जगत जगामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
त्रिगुन रूप जग रचा रचामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
अललपच्छ सम फिर उलटामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी
पहुंचे फिर निज धाम अनामी, सो मेरे प्यारे राधास्वामी
फिर हुये जस थे प्रथम अनामी, अस मेरे प्यारे राधास्वामी

स्वामी जी महाराज ने इस शब्द में लिखा है कि इन्सान कहां आता है। यहाँ आकर फिर वापस उसी अवस्था में चला जाता है। तमाम इन्सान राधास्वामी हैं। हम इस सृष्टि क्रम में आते हैं और मौज अधीन कुछ करते रहते हैं और अंत में वापिस लौट जाते हैं। दूसरे कबीर साहिब का भी एक शब्द है। वो लिखते हैं।

'पानी केरा बुलबुला, इस मानुष की जात।
देखत ही छुप जायगा, ज्यों तारा परभा"

संत कबीर फरमाते हैं कि इन्सान का अस्तित्व एक पानी के बुलबुले जैसा है, उठता है, कुछ समय ठहरता है और समाप्त हो जाता है प्रभात समय का तारा थोड़े समय के बाद प्रातः होते ही गुम हो

जाता है। इसी तरह हमारी जात अर्थात सुरत बुलबुले की तरह बनती है और नाना प्रकार की चेतनाओं में घूम फिर कर अन्त में अपने ही स्रोत में मिल जाता है। जहां से हम बने थे, वहीं गुम हो जाते हैं। जिस व्यक्ति को विश्वास हो जाता है कि मेरा जीवन अथवा अस्तित्व आना जाना है, वो भिर हाय हाय नहीं करता।

"कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेब बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली' बहर न देखो आय ॥

इस कड़ी में भी सत कबीर स्पष्ट रूप में लिखते हैं कि यह दस दिन के जीवन को नौबत बजा ले। जीवन खुशी से काट ले। हमने इस ग्राम में नहीं आना अथवा दुबारा इसको नहीं देखना। सुरत का बुलबुला एक ही बार बनता है, नौबत बजाकर चला जाता है।

"दुर्दभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार।
तरुवर सो पत्ता झड़े, बहुर न लागे डार ॥"

इस मानव देह को संतों ने अति दुर्लभ बताया जो कि बार बार नहीं मिलती। जैसे पेड़ से पत्ता गिरने पप फिर वहाँ नहीं जड़ सकता, इसी तरह चेतन के बुलबुले के टूट जाने के पश्चात फिर बुलबुले को वही देह, उसका वही अस्तित्व हमेशा के लिये सिट जाता है; दोबारा नहीं बनता।

"आए हैं सो जाएंगे, राजा रंक फकीर।
इक सिंहासन चढ़ चले, इक बंधे जात जंजीर ॥

हम जाने के लिये ही आते हैं--चाहे राजा हो, रंक हो फकीर हो। जिनको पूर्ण गुरु के सत्संग द्वारा यह समझ आ जाती है कि हम एक चेतन के बुलबुले हैं, अन्त में हमने अपने सिहान अर्थात जहां से हम बने वहीं गुम हो जाते हैं। सुरत शब्द से निकली और उसी में गुम हो जाती है। सुरत का शब्द में मिलकर एक हो जाना सिंहासन चढ़ना है। जिन लोगों को अभी यह समझ नहीं आई वो मन की आशाओं की जंजीरों में बंधे जाते हैं। दाता दयाल जी महाराज ने

भी एक शब्द में लिखा है, जिस में आशाओं का यर्थात रूप बताया है:—

"आसा इस भव के कारागार में, सचमुच जम की फांसी है।
आसा का बन्धन काटे वह, गुरमुख है गुरु विश्वासी है ।।
आसा वाले को चैन कहाँ, आसा के साथ है त्रास घनी।
मंगल आनन्द का भागी वह, संसार से जिसको उदासी है।
जैसी आसा वैसी वासा, जब लग आसा तब लग बासा।
जो आसा का बन्धन काटे, सत मत का अभ्यासी है ।।
आसा है जन्म मरन प्यारे, आसा तज दे फिर मुक्ति है।
आसा को सोच विचार ले तू, जड़ चेतन ग्रन्थि को गाँसी है ।।
आसा में दुविधा दुचिताई, आसा में भय लज्जा रहेत।
यह तीनों पाप अवस्था है, तज इनको फिर सुखरासी है ।।
आसा त्रिगुण की खानी है, यह सत रज तम की है रस्सी।
रज ब्रह्मा सत है विष्णु बली, तब शिव शम्भू कैलाशी है ।।
आसा है काम क्रोध लालच, आसा मद मोह की जड़।
क्यों आस में पड़ के निराश हुआ, तेरा रूप अजर अविनाशी है।
सतसंगत में सतगुरु के जा, सुन हित चित सेगुरु की बानी ।।
बानी सुन सुन निर्बानी हो, गुरु बानी सर्व प्रकाशी है ।।
राधास्वामी ने समझाया, घट ही में है तेरे सब कुछ।
घट में धंस आया अपना परख, जल में क्यों मोन प्यासी है ।।

संतों की ऊपर लिखी वाणियों द्वारा भी यही संकेत मिलता है कि हम एक चेतन के बुलबुले हैं। मालिक की सत्ता द्वारा उठे क्षोभ के केन्द्र बन जाते हैं अर्थात चेतन का बुलबुला बन जाता है जिसे हजूर परम दयाल जी महाराज ने स्पष्ट रूप में कहा है "वो तरह तरत की अवस्थाओं से गुजरने के बाद फिर वापिस उसी अवस्था में चला जाता है जहाँ से यह उठा था।" तो हजूर परम दयाल जी महाराज का यह अनुभव संतों की बाणियों से भी ठीक सिद्ध होता है।

शब्द

डुर्गादास चमन्

रे साधो, हँस चितवन आए

१—दुनिया में रहने वालों को है दुनिया से काम।
दुनिया ही को इष्ट बनाया समझा इसको नाम।
इन शब्दों को ऐसा व्यक्ति कभी समझ न पाए।
रे साधो, हँस चितावन आए।

२—अहंकार से ऊपर है अब सतगुरु आप बिठाया।
स्थूल, सूक्ष्म कारण तक है मन का रूप दिखाया।
जो समझा अब उसे खोल कर शब्दों में नित गाए।
रे साधो हँस चितावन आए।

३—प्रक्ट अप्रक्ट दोनों में ही रह कर करता काम।
मेरा मुझ में अंश नहीं है दाता का है नाम।
जिसकी आँखें सत को खोजें वह श्रद्धा से पाये।
रे साधो हँस चितावन आए।

४—हँस की सीमा कारण में है समझ के काम बनाओ।
हँस सदा है सत का इच्छुक, सत में है ठहराओ।
ढूँढ़ ढूँढ़ सत पुरुष को खोजो वह सब काम बनाए।
रे साधो, हँस चितावन आए।

किश्त छठी

फकीर चमन पत्रावली

होशियारपुर
९-५-७३

२५—प्यारे दुर्गादास चमन राधास्वामी

तुम्हारी चिट्ठी मिली। तुम सत्संग करा कर लोगों का उधार करना

चाहते हो। यह तुम्हारी इच्छा भी। मैं ने आज्ञा दे दी। फिर तुमने लिखा कि मुझे प्रशाद मिल जाऐ। मैंने कोई भी उत्तर नहीं दिया।

तुम्हारे पत्र से तुम्हारी अशान्ति का पता चलता है। कहां गया गया तुम्हारा ज्ञान ध्यान ? औलाद का मोह तुम में मोजूद है। आर्थिक अवस्था की कठिनाई की चिन्ता है। इस अवस्था में रहते हुए यदि तुम किसी को नाम दोगे या प्रशाद दोगे तो उसका क्या प्रभाव होगा। इसके अतिरिक्त जो कुछ किसी को मिलता है वह उस का अपना विश्वास है या उसका अपना कर्म है। या उस मालिक की दया है। मेरे विचार में जो कुछ हुआ यह तुम्हारे अन्तर जो है, दुनियाँ क्या है, क्यों है आदि २।

पहली श्रेणी के लोग भक्त दूसरी वाले आर्त्त व दुखी और तीसरी श्रेणी के लोग जिज्ञासु कहलाते हैं। पहली श्रेणी वालों का इलाज प्रेम दूसरी वालों का इलाज ज्ञान है। पहली श्रेणी वालों को कामयाबी देर से होती है। दूसरी श्रेणी वालों को बहुत देर से और तीसरी श्रेणी को जल्द कामयाबी हो जाती है। मगर शर्त यह है कि वह किसी पूर्ण पुरुष से सुमिरन ध्यान और भजन सीखकर जीवन को अमली बनायें। कई एक मेरे जैसे भी होते हैं जिन को तीनों रोग बाहरी प्रभावों और बाह्य जगत के रंग रूप से प्रभावित होकर बुद्धि यह सोचने और जानने के लिये विवश होती है कि वह कौन है क्या कारण अहंकार था उसको दूर करने के लिये हुआ। मालिक जो करता है अच्छा करता है। तुम कहते हो कि तुम मुझे मालिक मानता है वह राजी व रजा रहता है यह तुम्हारा अपना विश्वास है अब रहा कष्ट का जीव जो संसार में आता अपना कर्म साथ लाता है जो कुछ उसने बनगा होता है वह बन के रहता यदि समझ हो कि आपके पास इतना पेसा नहीं कि लड़के को वहाँकसेा सको तो उसको वापिस बला लो यहां अपनी शिक्षा दो मैंने अपने जीवन में कड़ी से कड़ी निधर्नता देखी। मैं लड़के को इन्जीनियर

पढ़ा नहीं सका। उसके कर्म में थे मौज ने प्रबन्ध कर दिया। मुझे तुम्हारे साथ हमदर्दी है मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि मालिक दाता आपकी आर्थिक अवस्था को ठीक करे। तुम ज्योतिषी हो हस्त रेखा को जानते हो। लोगों को बताते हो अपने लिए तुम्हारा ज्योतिष व हस्त रेखा कहाँ गई ? यदि तुम्हारा सच्चा विश्वास मालिक पर है तो मालिक ऐसे सामान पैदा करेगा जिस से तुम्हारी सम्भाल होती रहेगी। विश्वास और श्रद्धा रखो। तुम तो फकीर चन्द पर विश्वास रखते हो। मालिक एक शक्ति है जिस रूप द्वारा उस को कोई मानता है उसको शान्ति मिलती है और उसके काम होते हैं।

आपका फकीर

नोट

इस पत्र के प्रश्न पत्र का उल्लेख करना आवश्यक है। मेरा एक लड़का D. A. V कालिज जालन्धर में पढ़ रहा था। दूसरा लड़का All india sesidenital school admisrion में है तीन प्रान्तों हिमाचल हरियाणा व पंजाब भर में केवल डाकी वही पास हुआ है। उसको दाखिला YPS Patial में मिला केन्द्र सरकार ने सब कुछ व्यय देना था। फिर भी admission पर मुझे भी काफी व्यय करना पड़ रहा था। मैं एक प्राथमिक शिक्षक के स्थान पर काम कर रहा हूं। उस समय मासिक वेतन २२५)- था। अत: घर का व्यय, बड़े लड़के के कालिज का व्यय व यह नया खर्च चलना कठिन था हजूर को लिखा उन्होंने ऊपर लिखित पत्र द्वारा पूरी २ सम्भाल की।

शब्द

हँस हमारे हम हँसन के मौज का है विस्तारा ॥
मौज-मौज की अकथ कहानी, मौज ने रचना ठानी
हँसा, सुनले सत्य की वाणी ।

२- परम पुरुष का सत्संग सुनकर कुछ दिन साध कमाई ।
शर्णागत का पाठ याद कर सुनले मेरे भाई ॥
इष्ट अनामी वान्ध सुर्त से सच्ची अकथ कहानी ।
हँसा, सुनले सत्य की वाणी ।

३- जड़ ऊपर है नीचे पत्ते, पत्तों में है रचना ।
जड़ और पत्ते सम जब होंगे तब जवीन है सपना ।
सार शब्द में सार प्रकट है सतगुरु की सह दानी ॥
हँसा, सुनले सत्य की वाणी ।

४- राधा स्वामी की कृपा से सूझ बूझ यह आए ।
शर्णागत जो हुआ प्रेम से वह यह सब कुछ पाए ।
फकीर:कृपा से 'चमन' ने वाणी अकथ की सारी जानी ।
हँसा, सुनले सत्य की वाणी ।

कवीर शब्द व्याख्या

हँसा हो यह देश बिराना ।
चहुँ दिसि पाँति बैठि बगुलन की, काल अहेरत साँझ विहाना ॥१॥
सुर नर मुनी निरंजन देवा, सब मिलि कीन्हा वधाँना ॥२॥
आपु बँधे औरन को बाँधे, भवसागर को कींन्ह पयाना ॥३॥
काजी मुलना दुइ ठहराना, इनका कालिया लेत जहाना ॥४॥
कोइ कोइ हँसा गे सत:लोकै, जिन :पायो अमर परवाना ॥५॥
कहै कवीर और ना जैहे, कोटि भाँति हो चतुर सयाना ॥६॥

प्रिय सत्संगियो,

जब कभी सतगुरु आदेश देते हैं कोई न कोई विचार आपके सामने रखता रहता हूँ; यह सच जानना अपनी और से यह कुछ भी

नहीं सब आपका अपना ही है। जैसे, जिसकी जैसी दृष्टि होगी उसे वैसा ही भाव पसन्द आएगा। हजूर कहते थे कि हम सब परम चैतन्य रूप सुमद्र की बूंदे हैं। अहँ के पैदा होने पर हम अपनी २ प्राकृति के अनुसार कोई सन्त, साध, देवता, संसारी आदि बन कर जीवन में व्यौहार करते हैं।

ऊपर के शब्द में कबीर साहिब इसी विचार की ओर संकेत कर रहे हैं! सज्जनों कबीर साहिब केवल हँसो को चिताने के लिए सृष्टि में आए थे। नीचे के केन्द्रों पर रहने वाले जीवों के लिए उन के शब्द केवल संस्कार रूप में है। संस्कार धीरे २ फलता है। इस के लिए जन्म भी लग सकते हैं, किन्तु हँस ऊँचे केन्द्र के वासी होते हैं। उनमें किसी समय का कारण रूप में अहँ का संस्कार होता है। जब पूर्ण पुरुष चिता देता है तब वह टूट जाता है और अवस्था आ जाती है। फिर दिन रात अटूट मुक्ति पथ चलता रहता! इस शब्द को देखिए।

कबीर जी कहते हैं कि यह देश पराया है। अपना नहीं-देश, एक तो संसार है। यह तो पराया है ही-किन्तु यह पंच भौतिक शरीर भी अपना नहीं है। महाराज प्रत्येक सत्संग में जोर देकर कहते थे झि वह कहीं नहीं जाते। प्रत्येक का विश्वास काम करता है। अर्थात सुरत में जिस प्रकार का बीज (संस्कार) होता है वही फली भूत होता है। कबीर जी भी यही कहते है कि सुर नर मुनि सब बन्धे हुए है। अपनी २ वासना के अनुकूल स्थूल, सूक्ष्म और कारण मण्डलों में बन्ध हुए हैं। मुक्त नहीं हैं। यह सब आप तो बन्ध ही हुए हैं किन्तु दूसरों को भी बान्धते हैं। अर्थात उनकी मनोकामनाएं पूरी करते रहते हैं और चक्र बान्ध कर अगला सत्य का विचार आने नहीं देते। यह सब लोग अपने मन के दायरा में ही रहते हैं और भव सागर को ही अपना कर प्रसन्न रहते हैं। फिर कहते हैं कि काजी व मुल्ला सब द्वैत में फंसे हैं।

कबीर साहिब मुसलमानी राज्य के समय में हुए अतः उनकी शिक्षा उस समय के अनुसार थी। अब आगे आने वाले सन्तों की शिक्षा अति ही साफ होगी अर्थात स्वतन्त्र होगी। उसमें उपमा का दृष्टि कोण निम्न रहेगा। साफ २ बात होगी। समझने वाला हँस कहीं भी हो पढ़कर ही समझ सकता है। भाग दौड़ की आवश्यकता नहीं रहेगी। मालिक की ही ऐसी मौज है।

अब कबीर साहिब कहते हैं कि कोई २ हँस भँवर से ऊपर जाता है। जो सत्य की वाणी को समझ जाता है। या जिस पर उस की दया होती है। नहीं तो हँस, परम हँस भी चतुराई या ज्ञान ध्यान में फँसे रहते हैं। मित्रो। मालिक की दया प्राप्त करने के लिए उसके आगे पूर्ण शर्णागत हो जाना चाहिए। तभी मुक्ति लाभ हो सकता है।

सत्गुरु स्वरूप आत्माओ।

हजूर की दया से कुछ लिखता रहूँगा। यदि विचार अच्छे लगें तो 'मनुष्य बनो' को पढ़िए। इसका उत्साह बढ़ाइए। यदि कोई जिज्ञासु कुछ पूछना चाहे तो पूछ सकता है उत्तर के लिए लिफाफा साथ भेजना न भूलिएगा।

दासानुदास
दुर्गादास 'चमन'
गाँव व डा० टिहरी १७००३२
बरास्ता—ज्वाला मुखी
जि०—काँगडा (हि० प्र०)

सत्संग

परमदयाल पंडित फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियार पुर १०. ८. ८०

भजन बिन जीवन है निष्फल ॥

मृग तृष्णा मरुदल भूमी, सर हीन निरजल ।।
काल करम माया बरियाई, फाँसे जीव निरबल ।।
संभल-संभल कर पग का धरना, कहीं न जाना फिसल ।।
भजन प्रताप बचे कोई प्रानी, शब्द के मारग चल ।।
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ।।

दाता दयाल का एक यह शब्द मुझे हर वक्त याद रहता है:—

छिन-छिन उमर घटत दिन राती, कभी सांस कभी प्रभाति ।
माया मोह महाँ उत्पाती, इन से लगा लगन मत फकीरबा ।।

उमर गुजर गई जिन्दगी बदलती हुई चली आ रही है । अब यह शब्द पढ़ा कि **भजन** के बिना जीवन निष्फल है, मुझे नही पता भजन का अर्थ लिखने वाले ने क्या लिया है, मैंने उमर गुजार दी भजन करते हुए, भजन कहते हैं महबीयत को । जब से मुझ को लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्दर मदद करता है और मैं नहीं होता तब से मुझ यकीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्दर ख्यालात, शक्लें, विचार, राम-कृष्ण, देवी या गुरु का रूप, जो कुछ भी पैदा होता है यह वास्तव में माया है है नहीं ! आप सोचो ! मुझे यकीन होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए ? एक आदमी कहता है, तू आया, तूने यह कर दिया यह कर दिया, मैं तो गया नहीं ! तो जो कुछ उसके अन्दर फकीरचन्द प्रकट हुआ उसने कहा वह क्या था ? वह उसका अपना ही मन था । जिस किस्म का संस्कार, ख्याल व विचार उसके मन में पड़ा हुआ है वह उसके सामने फुरता है । तो जब मैं अब छोड़ जाता हूँ, इस मन ने ख्यालात को कोशिश करता हूँ **छूट** जायें वो बाकी जो मेरी अपनी अवस्था रह जाती है, मेरी आत्मा है या जो मैं हूं उस अवस्था में ठहरने का नाम भजन है, मेरी समझ में यह आया है:—वहाँ क्या होता है मृग तृष्णा मरुदल भूमी, सार हीन निरजल ।

जिस तरह से हिरण, चमकता तो रेता होता है, उसके पीछे

दौड़ता है, समझकर कि यहां पानी है और भ्रम-भ्रम कर मर जाता है, ऐसे ही हम लोग (जो मैंने समझा है) इस मन के चक्कर में आकर तरह-तरह के ख्यालात दौड़ाते हैं, कभी कहीं, कभी कहीं, कभी कहीं, कभी कहीं, तो जब इन्सान को यह पता लग जाता है तो फिर वह मन के पीछे नहीं दौड़ता बल्कि अपने आप में ठहर जाता है, यह कुछ मैंने समझा है।

आप आगे आ जाइये ! बैठ जाइये। आडर हमारे यहाँ आये हुए हैं यह मानवता प्रचारक रत्नछन्द जी महाराज। यह राजकुमारों तक सब जगह फिर के आये हैं और स्कूलों इत्यादि में मानवता का, प्रचार करते हैं। मैंने भी मानवता की आवाज उठाई, क्यों ? जब से मुझे यह पता लगा कि जो कुछ है इन्सान का अपना ख्याल है, मैं तो कहीं जाता नहीं, लोग अपने ख्याल से मुझको बना लेते हैं तो सिद्ध हुआ कि इन्सान के मन के जिस किस्म के ख्याल व विचार लेते हैं उसके अनुसार वह अपनी जिन्दगी गुजारता है और उसके अनुसार ही वह काम करता है। तो मैंने इस तजुर्बे के बाद इस अपने मन की जिन्दगी में सुखी व शान्त रहने के लिए सन् १९४७ में इन्सान बनो की आवाज उठाई, यह लोगों को क्या तालीम देते हैं इसका मुझे पता नहीं। मैंने बहुतेरी आवाज दी किताबें लिखीं क्या दुनिया इन्सान बन गई ? मैं खुद सोचता हूं, क्या दुनिया इन्सान बन गई ? यह अपना ही एक ख्याल है, अपना ही वहम है, मैंने जो कुछ किया अपने ही मन के जज्बे के जैर असर (प्रभावाधीन) किया इन्होंने जो कुछ किया अपने ही जज्बे के जेर असर करते हैं, यह किसी की बात को कौन सुनता है ! तो किसी का सुधार करना चाहता है, मेरी समझ में आया है, वह अपने वहम में मुबतला (ग्रस्त) है जिस तरह से कि मैं वहम में मुबतला हूँ। हरेक आदमी अपने ही मन के कर्मों को और अपने ही ख्यालात को भोगता है, मेरी तो तबीयत उदास हो गई ! जहाँ मैं मन्दिर में रहता हूँ, यहाँ के भी आदमी हैं, यद्यपि उनसे

नहीं, यहाँ भी पार्टी बाजियाँ हो जाती हैं। मैं सोचता हूँ, तूने आवाज उठाई, इन्सान बनो की दस, पन्द्रह, बीस, आदमी यहाँ रहते हैं, इन आपस में हेरा फेरी है, यद्यपि जाहिरा नहीं मगर अन्दररूनी। तो मन मानवता की आवाज तो मैंने भी उठाई, यह भी काम करते हैं परन्तु मैं देखता हूं कि मुझे असफलता हुई, दुनिया का बना क्या ! मेरे अपने राधास्वामी मन के सत्संगी धाम में या दाता दयाल के रिश्तेदार हैं, उनका आपस में झगड़ा में। तो फिर क्या करना है ? यह उनके लिए है जो अपने आपको कल्याणकारी बनना चाहते हैं, बस ! जो आदमी चाहता है कि मुझे सुख मिले, शान्ति मिले उनके लिए उपदेश है, सन्तों का भी और मानवता का भी जो नहीं चाहते उनको तुम लाख कोशिश करो, सिर पीट कर मर जाओ, कौन सुनता है ! मैं तो थक गया !! थोड़े उपदेश हैं दुनिया में ! कितने उपदेशक हैं ? कहीं गीता का प्रचार है, कहीं कुछ है परन्तु देश का हाल देखो !! इसका ईलाज क्या है ? प्रकृति करेगी। इसका ईलाज इन्सानी नसल पर मुसीबत आएगी, जब यह दुखी होंगे मरेंगे, कटेंगे, रोयेंगे, पीटेंगे, फिर शायद किसी को समझ आएगी, यह बिल्कुल मेरा अपनी जिंदगी का तर्जुबा है। सहरा इन्सान चाहता है, तो मुझको तो भई ! जिस तरह से इनको खब्त है, सारा चक्कर लगा आये, इस तरह मुझे भी खब्त है, तो मैंने इन्सान बनो को क्या समझा वह मैं बता देता हूँ कि इन्सान या मानव किसे कहते हैं। कबीर साहिब ने कहा है:—

गुरु पशु त्रिया पशु वेद पशु नर पशु संसार।
मानुष ताहे जनिए, जा में विवेक विचार॥

आदमी यह है जिसमें समझ और विवेक हो। एक होती है अक्ल और एक होता है विवेक। अक्ल तो हरेक जानदार में है, हरेक आदमी में बुद्धि है, हरेक जानवर है बुद्धि है, हरेक वृक्ष में बुद्धि है, हरेक चीज में बुद्धि है। तुम कहोगे वृक्षों में बुद्धि है ? हां ! लाजवंती

के पौधे को अगर आदमी हाथ लगावे वह सिकुड़ जाता है। उससे साबित हुआ है कि वह उसमें जो निकलती है हवा, उसको वह पसन्द नहीं करता, सिकुड़ जाता है। एक होता है विवेक। विवेक केवल इन्सान में आता है जानवरों व हैवानों में नहीं आता। जिसमें विवेक नहीं है, सच्ची समझ नहीं है तो वह यदि इन्सान नहीं है, तो वह हैवान के बराबर है। अब वह विवेक क्या है? मैं वह कहना चाहता हूँ। मुझे क्या पता लगा, कि इन्सान के संकल्प में और ख्याल में बड़ी ताकत होती है, यह विवेक मुझको मिला। कैसे मिला? जिन्दगी के तजुर्बे से। रात को आप सो जाते है स्वप्न में तुमको गुस्सा आता है, किसी को मुक्का मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है कि नहीं। स्वप्न में एक भयानक शक्ल देखते हो, तुम डर जाते हो, जबान बड़बड़ाती है कि नहीं? औरतों का मुझे पता नहीं, तुम आदमी हो स्वप्न में अपने ख्याल की एक औरत बना लेते हो, उससे भोग करते हो, तुम्हारा वीर्य निकल जाता है कि नहीं? अच्छा? मैं कहता हूँ मुझे विवेक कैसे आया क्या विवेक आया? मैं सोचता हूं कि स्वप्न का ख्याल जो हमारे वश में नहीं है क्योंकि अगर तुम यह चाहो कि अपनी मर्जी के अनुसार स्वप्न देखो, तुम नहीं देख सकते जब स्वप्न का ख्याल तुम्हारे शरीर पर असर करता है तो जाग्रत में जो कुछ सोचते हैं, ख्याल करते हैं इसका असर क्यों न आएगा! यह मेरा विवेक है। इस विवेक के सहारे मैं क्या कोशिश करता हूँ? कि जाग्रत में अपने मन को किसी से नफरत, किसी से द्वेष किसी से चारसौबीसी, किसी से हेरा फेरी, किसी के साथ चालाकी, किसी के साथ गुस्सा न करूँ। जो व्यक्ति ऐसा करता है मैं उसको मानव समझता हूं, उसको विवेक आ गया। मेरे ख्याल में मैंने समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, मामूली से मामूली आदमी भी समझ सकता है।

दूसरी बात यह है कि यह संसार मनोमय है, ख्याल की दुनिया

संकल्प की दुनिया है, दूसरे मयानों में माया की दुनिया है। जिस किस्म का ख्याल किसी को दिया जाता है यदि वह उस ख्याल को कबूल कर ले तो उसकी जिंदगी बदल जाती है, जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति। उदाहरणतयः सबसे पहले आजादी का ख्याल लोकमान्य तिलक ने दिया। उसका जो ख्याल था, अब देखो! कितना फैला कि स्वराज्य मिल गया तो यह दुनिया ख्याल की है। इसलिए हमारे दुःखों और मुसीबतों का कारण क्या है? कि हमारा ख्याल ठीक नहीं, हमारा विचार ठीक नहीं, जिस काम को हम करते हैं उसमें हमारी शुभ भावना नहीं है।

सबसे पहला ख्याल यह है कि हम सन्तान पैदा करते हैं, कोई घर ऐसा नहीं जिसको अपनी सन्तान से शिकायत नहीं, मुसतह सिकायात तो होती रहती हैं। दुनिया में देखो! हर जगह नौजवान लड़के क्या करते हैं। क्यों? क्योंकि हम सब खुदरौ औलाद हैं। खुदरौ जानते हो ना! हम अपने स्वाद के लिये औरतों के पास जाते हैं, बच्चा पेट में आ जाता है तो हमने नीयतन तो नहीं, बच्चा पैदा किया! इसलिये इस वक्त जो कुछ भी दुनिया में हो रहा है यह हम सब खुदरौ औलाद हैं। पुरुष और स्त्री अपने मन के जजबे में आकर आपस में मिले, अपने आप को कन्ट्रोल नहीं कर सके इसलिए वह मिले, इस वास्ते जो सन्तान खुदरौ पैदा हुई है यह उम्मीद करना कि यह अपने आप को कन्ट्रोल कर सकेगी, यह नहीं होगा!, नहीं होगा!! नहीं होगा!!! दुनिया में देखो, आज ही अखबार में मैंने पढ़ा खबर नहीं इंगलैंड में कितने हजार कुवारी लड़कियों के बच्चे हुए। अब जो इस तरह के बच्चे पैदा हुए उनसे यह उम्मीद रखो कि यह खुदरौ औलाद अपने लिए या देश के लिए या संसार के लिए फायदामन्द होंगे हरगिज नहीं! हरगिज नहीं! यह मेरी आजमायी हुई अपने तजुर्बे की बात कहता हूँ। मैंने भी खुदरौ औलाद पैदा की मगर मालिक ने मुझ पर बड़ी दया की कि वह मर

गई। जैसा ख्याल वैसा हाल !

तो मानवता क्या है, यदि यह कुछ कहना चाहते हैं दुनिया को तो दुनिया को सबसे पहले यह बताना चाहिए कि सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा किया जाय। पिछले जमाने में राजे महाराजे ऐसा ही करते थे। अब भी कम से कम आम (सामान्य) आदमी नहीं, तो जो पढ़े लिखे आदमी हैं, जिन्होंने हकूमत करनी है, इनको ऐसा करना चाहिए।

तीसरे जिस किस्म का ख्याल जिस किस्म की आस इन्सान अपने दिल में रखता में वह पूरी होती है। हम लोग गुरु पशु हैं, त्रिया पशु हैं। औरत है एक आदमी है, एक औरत पर लुभायमा है, वह जूते भी मारती है उसको, मगर वह काम के वश में हुआ जूते भी सहता है। औरत को 'औरत के ख्याल से न देखकर उसके पीछे दौड़ना, इसके मायने है स्त्री पशु, नारी पशु। गुरु के रूप को न समझना और गुरु-गुरु करतो रहना ऐसे आदमी हैं गुरु पशु। अब देखो ना ! एक आदमी मुहम्मद साहिब को मानता है, मुहम्मद साहिब का एक बाल कशमीर में गुम हो गया तो हजारों आदमियों का खून हो गया, उनको कहते हैं गुरु-पशु। रामायण के पन्ने किसी ने फाड दिये, अब झगडा पड़ गया, खून हो गये, मजहबी दुनिया में देखते नहीं हो क्या होता है ! अरे रामायण के पन्ने फट गये तो क्या हो गया ! या मस्जिद की ईट गिर गई तो क्या हो गया ! मन्दिर को किसी ने तोड़ दिया तो क्या हो गया। यह सब पशु हैं, बंधे हुए हैं। हम सब जितने हैं हम बैल की तरह बंधे हुए हैं। समझ गये न मेरा मतलब ! हम मजहब के अज्ञान और जहालत में बंधे हुए है। मैं आया ही इस संसार में इसलिए आया हूं कि इन मजहबों और पंथों ने और गुरुओं ने हम गरीबों को जो बेवकूफ बनाकर लूटा है इसको साफ कर जाऊँ। जब तक आदमी को तो विवेक नहीं, वह इन्सान नहीं है। विवेक क्या है, मुझे विवेक कैसे मिला ? तुम्हारी वजह से। मैं भी

गुरु पशु था इससे मैं इन्कार नहीं करता मगर दाता ने काम किया था और कहा था फकीर ! तुझको को सच्चा सतगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा, अब वह मिलेगा इसलिए मैं इस उत्तर में सत्संगियों को जो मुझे गुरु मानते हैं। मैं उनको गुरु मानकर नमस्कार करता हूँ क्योंकि तुम लोगों की वजह से मेरी आँख खुली, मैंने कहा ओहो ! बात क्या थी और मैंने क्या समझा। यह जितना खेल है यह सब मन के चक्कर का है। इस वास्ते मानवता क्या है ? मानवता है ! पूरी समझ हासल करना कि असलियत क्या है। असलीयत यह है कि ऐ इन्सान ! सब कुछ तेरे अन्दर है तेरा अपना ही आप है, तू भ्रम में पड़कर दूसरों का मोहताज हुआ फिरता है, कभी औरत के पीछे दौड़ता है, कभी हकूमत के पीछे दौड़ता है, कभी दौलत के पीछे दौड़ता है, कभी किसी के पीछे दौड़ता है इसी वास्ते यह भजन रखा गया है और सत्संग कराया जाता है ताकि जीव अपने मन के चक्कर में आकर दुःख सुख न उठाये, अपने आप को अपने आप में ठहराये, अपने आप को अपने आप में ठहराने का नाम भजन है। यह मैंने समझा है, हो सकता है कि मैं गलती पर हूँ, यह दावा करना कि मैंने जो कुछ समझा है यही final है यह मैं नहीं जानता।

मुझको विवेक कैसे हुआ ? मैंने मानवता की आवाज क्यों उठाई ? क्योंकि मैंने सोचा कि बगैर समझ के, बगैर विवेक के इन्सान की जिन्दगी बिल्कुल बेफायदा है, वह धोखे खाता है, चक्कर खाता है। यही कबीर साहिब ने कहा है कि हम सब एक जगह टेकी हो गये हैं, बन्ध गये हैं, पशु हैं हम, आदमी नहीं हैं। पशु वह है जो किसी खूटे के साथ बंधा हुआ है :—

जग में मानुष कोई नहीं देखा ॥
जो देखा सो बैल बना है, बैल पशु के रूपा।
बैल समान फिरत नित डोले, क्या प्रजा क्या भूपा ॥

अब देखो ! कोई गुरु नानक साहिब का बैल है, किसी सिक्ख-

इज्म के साथ बंधा हुआ है, कोई राम और कृष्ण के साथ बंधा हुआ है, कोई फकीरचन्द के साथ बंधा हुआ है और यदि जरा भी कोई ऐसी वैसी बात होती है तो आपस में लड़ाई करते हैं। यह विवेक मुझको सिर्फ तुम लोगों से आया और कबीर साहिब उसकी पुष्टि करते हैं।

कीई बैल गौरख का, कोई बैल शंकर का।
कोई बैल है रीति रस्म का, कोई मिट्टी कंकर का॥

आजकल क्या है ? कोई बैल गांधी जी का बना हुआ है। माफ करना ! आप लोग कांग्रेस वाले सारे गांधी जी के बैल बने हुए हैं, कोई नेहरू का बना हुआ है कोई किसी का कोई किसी का, सच्ची समझ किसी में नहीं है।

कोई बैल है चार वेद का, कोई षट् दर्शन का।
अपनी किसी ने खबर न पाई, देखा न मुख दर्पण का॥
पंथ के बैल पंथ में डोले, भेख भिखारी लाखों।
यह सब पशु हैं नर नहीं कोई, देख ले अपनी आँखों॥
गुरु पशु नर पशु त्रिया पशु, वेद पशु संसारा।
मानुष सोई जानिये, जाहे विवेक विचारा॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो बैल से बच कर रहना।
पक्षपात की सींग अडेगी, दुख कलेश नहीं सहना॥

अब देखो न दुनिया में किसने फिसाद होते हैं इसलिए इस मजहबी दुनिया को साफ करने के लिए मैंने इन्सान बनो की आवाल उठाई है क्योंकि यह भी इन्सान बनो का अर्थात मानव धर्म का प्रचार करते हैं इसलिए इनको कहता हूँ कि प्रचार करना है तो ठीक रास्ते से करो, गांधी जी के पशु मत बनो, फकीर चन्द के पशु मत बनो, किसी मजहब के पशु मत बनो इन्सानियत के पशु बनो, यह मेरा भावार्थ शब्द निकला था :—

भजन बिन जीवन है निष्फल।

मुझे नहीं पता भजन के क्या मायने हैं सन्तों, मैंने जो समझा

वह कहता हूँ। जीवन निष्फल कब होता है ? जब हमारा मन किसी बाहर की चीज की तरफ दौड़-दौड़ कर उसके हासिल करने की फिक्र चिंता और गम में लगा रहता है वह जीवन का निष्फल पना है, मैंने जो समझा ! हम मृग तृष्णा जल के लिए अपनी आशाओं के पीछे दौड़ेते हैं और इन आशाओं से परे हट कर अपने आप में ठहर जाना और इस मन की चालो के पीछे न दौड़ना, उसकी फिकर व गम न करना यह है भजन। परन्तु यहाँ तक पहुँचने के लिए हमें मजिले है। पहले शारीरिक जजवात को रोकना पड़ेगा। जिस्म के अन्दर जजवात पैदा होते हैं न। काम के जजवात नौजवान बच्चों में पैदा होते हैं। कल एक लड़का मुझे मिला किसी दोस्त का था, उसको देखा, बीस-इक्कीस साल का था, चेहरा उड़ा हुआ, गाले बीच में धसी हुई, मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा बेटा ! हथरसी करना छोड़ दे ! मेरे मुँह की तरफ देखने लगा, मैंने कहा झूठ कहता हूं ? सिर नीचा कर दिया। आपको बताये देता हूँ कि नौजवानों की दुनिया को ठीक करना मुश्किल है। जब तक कि औलाद को औलाद के ख्याल से नहीं पैदा किया जाता। परन्तु इसमें लड़को का कोई कसूर नहीं है। माँ-बाप जब बच्चा पेट में होता है भोग करते रहते हैं, माँ कामातुर होती है उसका असर उस बच्चे पर पड़ता है, वह बच्चा जब पैदा होगा वक्त से पहले कामी हो जाएगा और बुरी बातें करेगा, यह है कि जिस के लिए मैं सिर पीटता हूँ, जिसके सुधार के लिए मैंने यह मुसीबत उठाई क्योंकि दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। यह जितना कसूर है सब हमारा अपना माँ बाप का है। अगर किसी का लड़का खराब है तो मैं कहूँगा उसके माँ बाप खराब हैं।

मैंने एक लड़का सन्तान के ख्याल से पैदा किया, मेरी औरत के दिल में क्या ख्याल था, मुझे पता नहीं, आज वह बड़ा भारी अफसर है, मुझको बचपन से लेकर आज दिन तक, अब तो वह पचास वर्ष

का होने वाला है, बचपन से मौका नहीं मिला कि उसे ओय कहूँ, थप्पड़ मारना तो रहा दर किनार ! यहाँ छुट्टी कभी आता है मेरी रिक्शा पर नहीं चढ़ता। मेरा आदमी कहता है बाबूजी ! चलों मैं ले चलूँ । नहीं ! यह पिताजी को रिक्शा है मेरा आदमी है भूदेव, उसको खाना मेज पर देता है खा लेता है, वह वर्तन उठाने लगता है कहता है नहीं ! आप पिता जीके आदमी हैं मेरे जूठे वर्तन मत उठाओ। मैं जो कुछ कहता हूँ तजुर्वे के बाद बात कहता हूँ। मेंने तो खुदरो औलाद पैदा की ! मैंने भी तो बड़ी टकरा मारी हुई है। गलतियाँ खाई हुई हैं, यह नहीं ! कि मैंने नहीं खाई !! परन्तु मेरी आँख खुल गई और यह आँख केवल तुम लोगों ने खुलाई केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। इसी ख्याल को पर्दे में रखकर इन्सानी नसल भिन्न-२ मजहवों व सैक्टरों में बट गई, कोई देवी का पुजारी कोई कृष्ण का पुजारी कोई राम का पुजारी कोई किसी का पुजारी, कोई किसी का पुजारी कोई किसी का पुजारी। वृन्द्रावन में एक फिरका है, 'जय राधा' यदि उनके सामने 'जय कृष्ण' कहो तो लड़ाई करते हैं। यह दुनिया है क्या ? क्योंकि विवेक नहीं है क्योंकि समझ नहीं ! मन की तंरगों मैं इन्सान वह जाता है। तो मैंने भजन को क्या समझा :—

भजन बिन जीवन है निष्फल।
मृग तृष्णा मरुथल भूमि, सारहीन निर्जल

यह ! हम क्या करते है ? शेख चिल्ली की तरह अपने मन की ख्याली कलां बाजियाँ, तरह २ के ख्यालात हर वक्त उठाते रहते, हैं, वह करेंगे, जी यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे आशाओं के पीछे फंसे रहते हैं। वह जिस तरह एक शेखचिल्ली की कहानी थी कि कहीं गया, किसी का दो आने के पैसे के लिए अण्डों का टोकरा सिर पर उठाकर ले चला। दिल में सोचनने लगा, दो आने मिलेंगे, इसकी मुर्गी लूँगा, उसके अण्डे बेचूँगा, फिर बकरी बनाऊँगा, फिर यह बनाऊँगा,

फिर यह बनाऊँगा, फिर शादी करूँगा, फिर लड़के हो जायेंगे (अपने ख्याल में) वह लड़के आके मुझसे पैसा मागेंगे, मैं कहूँगा धत् तेरे की मैं नहीं देता। चूहि उसने धत् तेरे की कहा टोकरी नीचे गिर गई, वह दब्बनी भी गई ! इस तरह से यह दुनियाँ है।

आज का सत्संग विशेषकर मैं इनको करा रहा हूं, यह राजकुमारी से कहाँ तक फिरते हैं और महात्मा गाँधी और विनोबा-भावे के अनुयायी हैं। मेरे दोस्त ! एक बात कहूँ तुमको दर्द दिल से ! जो कुछ कोई कहता है, वह उसके अपने ही ख्यालात के आधार पर कहना है। महात्मा गाँधी अहिंसा (Non Voilence) के अनुयायी थे, उन्होंने कहा फोड़ा रखने की कोई जरूरत नहीं, समझते हो कि नहीं ! यदि यह महात्मा गाँधी के कहने पर लगते कि फौड़ा की कोई जरूरत नहीं तो भारत वर्ष का सत्यानाश हुआ हुआ होता, सोचो मेरी बात को ! उन्होने अपने ही दिल से सब कों ऐसा समझ लिया। इस वास्ते जो कुछ मैं कहता हूँ यह मेरा अपना ही भाव है। परसों मेरे दिल में ख्याल आया कि इन हकूमत वालों को लिखूँ कि तुम्हारी मत मारी गई है ! एकता बनाओ वरना तुम्हारा भारत नहीं रहेगा। फिर मैंने सोचा, कौन सुनेगा ! क्या फायदा इनको लिखने का !! दुनिया में हरेक चीज विवेक के साथ होनो चाहिए। एक मौके पर हमको लड़ाई करनी पड़ती है एक मौके पर हमको नीचा होना पड़ता है यह गलत ख्याल है कि हर जगह जी हजूरी हजूरी, जी हजूरी, जी हजूरी और न ही हर जगह लड़ाई झगड़ा ही चाहिए। इस वास्ते सन्तों में गुरु की जरूरत को महसूस किया है कि जो कुछ हो वह किसी अपने कामिल इन्सान से जिसको कुदरत के राज का पता हो उसकी राय लेकर चलो। इस वक्त के लिए अपनी समझ से मैंने सन् १९४७ में यही आवाज उठाई कि इस वक्त इन्सान बनने की जरूरत नहीं :—

काल करम माया बरियाई, फंसे जीव निरबल।

यह माया अर्थात अक्ल बुद्धि का, इन सब ने हम जीवों को काबू किया हुआ है। माया क्या है ? हमारी बुद्धि। इस बुद्धि को साफ करने के लिए किसी कामिल इन्सान के सत्संग की जरूरत है इस वास्ते गुरु धारण किया जाता है, दुनिया ने यह समझा हुआ है, जाओ, गुरु धारण करो जो कुछ वह कहता है उसको समझो नहीं उसके हुक्म पर न चलो। हमारे यहाँ भी तो अपने गांव में गुरु पुरोहित करते होते थे परन्तु अब वह प्रणाली बिगड़ गई, बस :—

संभल-संभल कर पग का धरना कहीं न जाना फिसल।

फिसलना क्या है ? मन के चक्कर में आ जाना। तो यह आये हैं, मेरे नाम चूँकि जगत कल्याण की duty थी, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीर चन्द ! तूने जगतकल्याण के लिए क्या किया ? मैंने साफ कह दिया कि इस असूल के अनुसार जो मैंने पहले बयान किया है कि जब तक इन्सान के अन्दर नफरत और द्वेष जो इस वक्त फैला हुआ है यह रहेगा इसका अन्जाम कभी बखैर नहीं होगा। इस वास्ते मैंने पहले ही लिखा था कि Present System of election is a sweet poison to the human race. अर्थात वर्तमान चुनाव प्रणाली एक मीठा जहर है क्योंकि इसमें नफरत द्वेष, बुग्ज हसद और कीजा के ख्यालात उठते है और यह आसमान को जाते हैं और फिर यह वापिस आकर के देश में तबाही लाते हैं। दूसरे, मैंने जगत् कल्याण के लिए लिखा था, कहे जाता हूँ बहैसीयत-ए-फकीर जब तक भारत का दार-उल-खिलाफा (राजधानी) दिल्ली है, यह अपना जितना मन्त्री चाहे जोर लगा लें देश में शान्ति है, शान्ति नही आएगी, नहीं आएगी, नही आएगी, नहीं आएगी ! दुनिया पूछ सकती है क्योंकि ? दिल्ली की जगह ऐसी है जहाँ जब से यह बनी है तब से यहाँ जो आदमी राजा रहे इनके आपस में झगड़े रहे। वह जो माद्दा है, वह नष्ट नहीं होता, वह जो ख्या-

मौजूद है, जो भी वहाँ हकूमत करेगा उसके दिमाग पर असर करेंगे वह सही बात सोच ही नहीं सकेगा। क्योंकि ख्याल का मण्डल जिस किस्म का होता है, जो आदमी वहाँ पर जाता है वह उसके असर से बच नहीं सकता कोई शायद सन्त बचे तो बचे अन्यथा कोई बच नहीं सकता। मैं अपनी duty पूरी कर जाना चाहता हूँ, दूसरे जब तक संसार से यह मत्रहबो मनाफत नहीं जाती तब तक यह जो मर्जी चाहे कर ले मुल्की शान्ति नहीं मिल सकती। घरेलू शान्ति-सन्तान को सन्तान के ख्याल से पैदा करो, घरों में शान्ति रखो, जिस घर में कलह है बहाँ कभी सुख नहीं, मेरे पास रोज केस आते हैं :—

जिस घर कलह कलन्त्र वरसे, उस घर घड़यों पानो वरसे।

चौथे विषय विकार को कम करो। औरतें सिर्फ बच्चे पैदा करने के लिए, हम लोगों ने इसको एक विलासता का सामान समझा है और औरतों ने मर्दों को विलासता का सामान समझा है, इस वास्ते देश में तबाही आएगी, मेरे जैसे फकीर बहुतेरे उपदेश दे जायें लोगों को नसीहत करते जाये मगर होता वही है जो हमारे कर्म इस वक्त घरेलू और मुल्की अच्छे नहीं है, कभी शान्ति और सुख की हम नींद नहीं ले सकते। मेरे तजुर्बे में यह बात आई है, समझ गये मैंने क्या कहा आपको ! मेरी बात सुन रहे हैं !! गांधी पशु मत बनो, विनोबा भावे पशु मत बनो, फकीर पशु मत बनो, विवेक पशु बनो, समझ पशु बनो। इनके जिन्दगियों के तजुर्बात अलग-अलग होते हैं, यह नहीं ! कि महात्म गांधी सन्त थे, मैं नहीं मानता. महात्मा गाँधी was father of the nation in political line रूहानी दुनिया में वह कोरे थे और जो कुछ भी उन्होंने हासिल किया यदि वह सच्चे दिल होते तो देश की तबाही न होती, particion न होती। बात सच्ची कहता हूँ. मैं डरता नहीं दुनिया से जो सच्चाई है वह सच्चाई है। यह नहीं। कि मैं महात्मा गांधी की इज्जत नहीं करता हूँ इज्जत करता हूँ मगर मैं उनको सन्त नहीं

मानता, नहिं।

आप आये अच्छा किया, मैंने आपको सत्संग बता दिया. अपने views दे दिये। अब रह गया यह कि हम लोग गुरुओं के पास जाते हैं कहते हैं हमें कुछ मिले दया करें गुरु। अरे ! गुरु की दया क्या है दुनिया के दीवानो ! गुरु ज्ञान देता है, समझा देता है, विवेक देता, सीधा रास्ता बताता है, एक तो दया उसकी यह है। दूसरे उसका हित अर्थात शुभ भावना काम करती है जिस तरह माँ है, बच्चा होता है वह चाहती है बच्चा बड़ा हो जाय, लायक बन जाय, यह हो जाय, वह हो जाय ! इस तरह का यदि जजबा किसी गुरु में किसी के लिए है तो वह गुरु है। आप आये थे मैंने आपको कहा था परसों आना पहले तो मुझे पता नहीं लगा कि आप बैठे हुए हैं वरना मैं शुरू से ही कुछ और start करता है जब मैंने देखा तो फिर मैंने ख्यालात को बदल दिया। जाओ काम करो, सबसे पहले खुद इन्सान बनो। अगर गाँधी पशु बने रहोगे, या विनोबा भावे पशु बनें रहोगे तो यह गलत है, हाँ उनकी quation दे सकते हो, यह ठीक है परन्तु पशु नहीं बनना ! मैंने जैसे बताया कि गांधी के पशु जो हैं यह military न रखें क्योंकि गाँधी जी ने कहा है कि भई ! military नहीं रखनी। अगर ऐसा करोगे तो मारे जाओगे गांधी खा जाएगा। जमाने और हालात के मुताविक काम करना चाहिए, समय-समय पर जैसा वक्त आये वैसा बदलो तब फायदा होगा। लकीर-फकीर नहीं होना चाहिए, आदमी को हालात और वाक्यात के मुताबिक इस वक्त जिस चीज की जरूरत है वह करनी चाहिए अगर मैं प्रधानमन्त्री होता तो Democracy छोड़ देता, dictator ship के चाहिये भारत में वगैर Ship के Dictater.

भय विन प्रीति न होई।

यह लोग हड़ताल करते हैं, क्या यह इन्सान ने बच्चे हैं ! देश का सत्यानाश करते हैं, गाडियाँ जलाते हैं, बसें जलाते हैं ...

उनका क्या कसूर है। वह खुदरौ औलाद है। उनका कसूर नहीं है कसूर अपना है मां बाप का।

यह मैंने आपको समझाने के लिए जिस तरह बातें की हैं। अगर आप मानवता का प्रचार करना चाहते हैं तो मेरा ख्याल यह है जो मैंने बयान किया। बाकी यह है कि जो कर्म में तेरे लिखा है तूने भोगना है, जिस काम के लिए तू करेगा, जिस काम के लिए मैं आया हूँ मैं करूँगा उपदेश मैं भी बहुतेरा करता हूँ मानवता के लिए।

हजूर परमसत मानव दयाल डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा
श्री महाराज का प्रोगराम

१६-१-८३	होशियार पुर से दहली
१७-१-८३	दहली से काजीपेट (हनमकुन्डा)
२१-१-८३	हनमकुन्डा से करीमनगर
२२-१-८३	करीम नगर से सिकन्दबादं
२३-१-८३	सिकन्द्राबाद से बासवाडा
२५-१-८३	बासवाडा से सिकन्द्राबाद
२६-१ ८३	सिकन्द्राबाद से हैदराबाद
२८-१-८३	हैदराबाद से बम्बई, विशाखा पटनम
४-२-८३	बम्बई से इटारसी
६-२-८३	इटारसी से कटनी
९-२-८३	कटनी से राधास्वामी धाम
१३-२-८३	राधास्वामी धाम से खानपुर
१४-२-८३	खानपुर से आजमगढ़
१७-२-८२	आजमगढ़ से मुरादाबाद, विलारी
२१-२-८३	देहली वापिस

नोट :—इन्दोर, उज्जैन, मथुरा, अलीगढ़, सहारनपुर का प्रोग्राम अगले अंक में।

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर